4

''हों, या न हों''

(फिलिप्पियों 1:20-30)

हेमलेट विलियम शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटकों में से एक है। नाटक की सबसे प्रसिद्ध पंक्ति ''हेमलेट का स्वागत कथन'' है: ''हों, या न हों, -सवाल तो यह है।''[1] जहां तक मुझे याद है ये शब्द जाने-पहचाने थे, पर जब तक मैं बड़ा नहीं हुआ, तब तक मुझे हेमलेट का सवाल समझ नहीं आया। वह आत्महत्या करने का विचार कर रहा था। वह जीवन और मृत्यु के बीच निर्णय लेने यानी जीने ''[होने]'' या मरने ''[न होने]'' के बीच निर्णय लेने की कोशिश कर रहा था। हमारे वचन पाठ में पौलुस को समझ नहीं आ रहा था कि अच्छा क्या है जीना या फिर मर जाना:

> पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिए लाभदायक है तो मैं नहीं जानता, कि किस को चुनूं। क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जाकर रहूं, क्योंकि बहुत ही अच्छा है। परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है (आयतें 22-24)।

यूनानी शब्द का अनुवाद ''अधर में लटका'' ''तंग [खदान] में पर्यटक के लिए इस्तेमाल की जगह/स्थान, ... जिसके दोनों ओर पत्थर की दीवार है और वह किसी ओर घूम नहीं सकता, केवल सीधा जा सकता है।''[2] आज हम कह सकते हैं कि वह ''पत्थर और कठोर स्थान के बीच में'' था। दुविधा पैदा करने वाली दोनों दीवारें जीना और मरना था।[3]

हेमलेट और पौलुस ने एक जैसे सवालों पर विचार किया। पर दोनों में कितना अन्तर था! हेमलेट अपने हाथों से मृत्यु पर विचार कर रहा था, जबकि पौलुस इसे परमेश्वर के हाथों में दे रहा था। हेमलेट को कोई भी विकल्प पसन्द नहीं था-वह जीवन से दुखी था, पर मरने से डरता था; पौलुस के लिए दोनों ही विकल्प अच्छे थे![4]

अपने वचन पाठ से हमें जीवन और मृत्यु पर कई मूल्यवान सबक सीखने को मिलते हैं। 20 से 30 आयतें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस से सम्बन्धित हैं कि पौलुस जीवित रहा या मर गया।

पौलुस की दुविधा (1:20-24)

हमारा पिछला अध्ययन आयत 20 के साथ समाप्त हुआ था: ''मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूं कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊं, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसे ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूं या मर जाऊं।'' पौलुस ने हर हाल में मसीह को महिमा देने की ठान रखी थी, नीरो के सामने उसकी पेशी का परिणाम चाहे जो भी हो यानी उसे छोड़ दिया जाता (और वह जीवित रहता) या अदालत उसे मृत्यु दण्ड दे देती।

‘‘जीवित रहूं या मर जाऊं’’ शब्दों से जीवन और मृत्यु पर ‘‘पौलुस की अपने आप से बातें करने’’[5] की बात प्रसिद्ध हो गई। अगली आयतें पौलुस के लेखों के इससे भी असामान्य भागों में से एक हैं। जिसमें दार्शनिक रूप में यह चर्चा की गई है कि उसके लिए जीवित रहना बेहतर होगा या मर जाना:

> क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिए लाभदायक है तो मैं नहीं जानता, कि किस को चुनूं। क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि बहुत ही अच्छा है। परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है (आयतें 21-24)।

जैसा कि पहले कहा गया है हेमलेट के विपरीत पौलुस आत्महत्या का विचार नहीं कर रहा था। इसके विपरीत वह अपनी प्राथमिकता से मिलने वाले परिणाम पर अपने मन को तलाश रहा था। यह तो ऐसा है जैसे प्रेरित ने कागज़ के एक टुकड़े के बीच में एक रेखा खींच दी हो। ऊपर वाले भाग में ‘‘जीवन के लिए’’ वाक्यांश लिखा हो। नीचे वाले भाग में ‘‘मृत्यु के लिए’’ शब्द हों। फिर वास्तव में उसने दोनों शीर्षकों के नीचे के प्रत्येक विकल्प के लाभों[6] की सूची बनाई।

जीवन के लिए

आयत 21 के पहले भाग में पौलुस ने जीवन के पहले भाग के साथ आरम्भ किया: जीवन = मसीह। ‘‘क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है।’’ यह ‘‘नये नियम के श्रेष्ठतम वचन में से है।’’[7] इसे फिलिप्पियों की पुस्तक का केन्द्र कहा गया है।

‘‘मेरे लिए’’ का अनुवाद यूनानी भाषा के एक शब्द से किया गया है, जो इस पर ज़ोर देते हुए वाक्य के आरम्भ में मिलता है। पौलुस मुख्यतया कह रहा था, ‘‘दूसरों के लिए जीवन चाहे जो भी हो, *मेरे लिए* तो यह मसीह है।’’ फिलिप्स के अनुवाद में ‘‘मेरे लिए जीने का अर्थ केवल ‘मसीह’ है।’’ मसीह पौलुस के जीवन का आरम्भ, उसके जीवन की सामर्थ और उसके जीवन का लक्ष्य था।

हमारे लिए क्या है? विचार करें कि हम इस वाक्य को कैसे पूरा कर सकते हैं: ‘‘मेरे लिए जीवित रहना ___________है।’’ क्या हम में से कोई रिक्त स्थान में ‘‘धन,’’ ‘‘सम्पत्ति,’’ ‘‘प्रसिद्धि,’’ ‘‘शक्ति,’’ या ‘‘प्रभाव’’ जैसे शब्दों से भरेगा? आपके लिए संसार में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ क्या है? क्या यह चीज़ मसीह है या कोई और? हम उसी से प्रभावित होते हैं, जो हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

इस सम्भावना पर विचार करते हुए वह पेशी से बच जाएगा पौलुस ने निष्कर्ष निकाला कि वह सही होगा। वह फिर भी मसीह के निकट ही रहेगा।

मृत्यु के लिए

दूसरी ओर हो सकता है कि वह न छूटे और उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़े। (वास्तव में उसे कई साल बाद मृत्यु दी गई थी, जब उसे रोम में दूसरी बार कैद किया गया था।) आयत

21 के अन्तिम भाग में पौलुस ने कारण दिया कि इस सम्भावना से उसे परेशान क्यों नहीं है: *मृत्यु = लाभ।* ''और ... मर जाना लाभ है।'' आयत 23 में पौलुस ने उसकी मृत्यु के सबसे अधिक परिणाम की बात की; परन्तु अभी के लिए हम और सांसारिक लाभ पर विचार करते हैं कि उसे मृत्यु में *राहत* मिलनी थी। उसने थक जाना था। फिलिप्पियों की पुस्तक में उन परेशानियों के कई हवाले हैं, जो उसने सही थीं और सह रहा था (1:7, 13, 17, 30; 4:3, 14)। इसके अलावा उसके लेखों की और झलकियां हमें यह विचार देती हैं कि वह कैसे थक गया होगा। फिलेमोन 9 में, जो पौलुस के फिलिप्पियों के नाम लिखने के समय ही लिखी गई, प्रेरित ने अपने आपको ''मुझ बूढ़े पौलुस को जो मसीह यीशु के लिए कैदी है'' कहा। 2 कुरिन्थियों 11:23-28 में उसने अपनी कुछ पेशियों का उल्लेख किया:

> क्या वे ही मसीह के सेवक हैं? ... मैं उन से बढ़कर हूं! अधिक परिश्रम करने में; बार-बार कैद होने में; कोड़े खाने में; बार बार मृत्यु के जोखिम में। पांच बार मैं ने यहूदियों के हाथ से उन्तालीस-उन्तालीस कोड़े खाए। तीन बार मैंने बेंतें खाईं; एक बार पत्थरवाह किया गया; तीन बार ज़हाज जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए; एक रात दिन मैं ने समुद्र में काटा। मैं बार-बार यात्राओं में; नदियों के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में; अपने जाति वालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों में के जोखिमों में; जंगल के जोखिमों में; समुद्र के जोखिमों में; झूठे भाइयों के बीच जोखिमों में। परिश्रम और कष्ट में; बार-बार जागते रहने में; भूख-प्यास में; बार-बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में और-और बातों को छोड़कर जिन का वर्णन मैं नहीं करता सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है।

प्रकाशितवाक्य 14:13 की आशीष यदि किसी के लिए लागू होती होगी तो वह पौलुस के लिए ही हो सकती है: ''जो मृतक प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं, ... क्योंकि वे अपने सारे परिश्रम से विश्राम पाएंगे।'' पौलुस के लिए मृत्यु का अर्थ पाप, बीमारी और दुखों से छुटकारा था।

परन्तु आइए आयत 21 के पहले और अन्तिम भागों को इकट्ठा करने में सावधान हों: ''क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है।'' ''मर जाना लाभ'' *केवल* तभी है यदि ''जीवित रहना *मसीह*'' हो। प्रकाशितवाक्य 14:13 वाली प्रतिज्ञा उन्हीं के लिए है ''जो *प्रभु में* मरते हैं।'' एक पल के लिए रिक्त स्थान की पूर्ति वाले अभ्यास में वापस चलें। यदि आप यह कहते कि ''मेरे लिए धन''-या ''सुख'' या मसीह के अलावा कोई और चीज़ है तो? इसे पूरा करने के लिए कुछ और वाक्य हैं: ''यदि जीवित रहना धन है तो मर जाना __________ है''; ''यदि जीवित रहना सुख-विलास है, तो मर जाना __________ है।'' यदि आपको पता नहीं है कि इन रिक्त स्थानों में क्या भरना है, इसका उत्तर मत्ती 16:26 में मिलता है: ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?'' आपके लिए यदि जीवित रहना मसीह है तो मर जाना *लाभ* ही होगा। आपके लिए यदि जीवित रहना कुछ और है तो मर जाना *हानि* ही होगा।

जीवन के लिए

आयत 22 के भाग में पौलुस ने जीवित रहने का एक और कारण दिया: *जीवन = लाभदायक परिश्रम।* ''पर यदि शरीर में जीवित रहना ही[8] मेरे काम के लिए लाभदायक है।'' यदि उसे जीना था तो उसे अपने मिशनरी प्रयासों को बढ़ाने का अर्थात प्रभु के लिए शिक्षा देने और फल इकट्ठा करते रहने का अवसर होगा।

कितनी कठिन पसन्द है! आयत 22 का अन्तिम भाग इस पर ज़ोर देता है कि यह कितना कठिन है: ''... मैं नहीं जानता कि किसको चुनूं।'' ''जानता'' (यू.: *gnorizo*) शब्द का अर्थ ''बताना'' या ''प्रकट करना''[9] है। NKJV में इसका अनुवाद ''मैं किसे चुनूं बता नहीं सकता।'' अन्त में पौलुस ने मामले को परमेश्वर के हाथ में दे देना था। उसका विश्वास याकूब 4:15 की फिलॉस्फी में था ''यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी करेंगे।''

मृत्यु के लिए

निर्णय बेशक कठिन था पर पौलुस की अपनी निजी प्राथमिकता थी। आयत 23 का अन्तिम भाग मृत्यु को चुनने के लिए उसका चरम कारण देता है: मृत्यु = *प्रभु के साथ रहने के लिए विदाई।* ''... जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि बहुत ही अच्छा है।'' इस बात पर ज़ोर देने के लिए कि ''प्रभु के साथ रहना'' कितना अद्भुत होगा, प्रेरित ने तीन तुलनात्मकों का इस्तेमाल किया। यह केवल ''*बेहतर*'' नहीं होना था। यह केवल ''*बहुत* बेहतर'' नहीं होना था, बल्कि यह ''*बहुत-बहुत बेहतर*'' होना था!

पौलुस को कैसे मालूम था कि इस जीवन को छोड़ना कितना अद्भुत होगा? उसे पहले आने वाले उस संसार की महिमा की एक झलक दिखाई गई थी जब उसे ''*बहुत-बहुत* बेहतरीन होना था!'' उसे सम्भवतया आने वाले संसार की महिमा की एक झलक दी गई थी, जब उसे ''... तीसरे स्वर्ग तक ... स्वर्ग लोक तक उठा लिया गया'' था (2 कुरिन्थियों 12:1-4)। मुझे हैरानी है कि अगले जीवन को देख लेने वाले के लिए यह जीवन कैसा लगता होगा। उसकी तुलना में इस जीवन की अति सुन्दर चीज़ें भी बेकार लगती होंगी; सबसे महंगी चीज़ें भी बेकार लगती होंगी! हम परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए उन विवरणों को पढ़ते हैं, जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखे हैं और चकित होते हैं कि हमारा अनन्त निवास कैसा होगा। परन्तु पौलसु ने तो सचमुच में इसे *अनुभव किया* था। 2 कुरिन्थियों 12 चाहे सुनने की ही बात करता है पर पौलुस ने अन्य ढंगों से भी अनुभव किया होगा कि स्वर्गलोक कैसा है। एकांत के पलों में उसका मन पीड़ा और कष्ट के इस संसार को छोड़कर स्वर्गलोक में वापस जाने को कितना करता होगा!

आयत 23 में पौलुस ने मृत्यु के लिए एक सुन्दर प्रिय उक्ति (मृदुभाषा) का इस्तेमाल किया: ''कूच करके मसीह के पास जा रहूं।'' ''कूच'' यूनानी शब्द (*analuo* के एक रूप) का अनुवाद है, जो ''खोलना'' (*luo*) के अर्थ वाली क्रिया के साथ ''ऊपर'' (*ana*) के लिए पूर्वसर्ग को मिलाता है। इस शब्द का इस्तेमाल तम्बू खोलकर आगे बढ़ने, जहाज़ को लंगर से खोलने, गुलाम या कैदी को आज़ाद करने के लिए किया जाता था।[10] पौलुस ने मृत्यु को ''कूच'' के रूप में देखा और हमें भी वैसे ही देखना चाहिए। मसीही व्यक्ति के लिए यह जीवन एक यात्रा है और मंज़िल मसीह के साथ होना है। आम तौर पर उस मंजिल तक पहुंचने के लिए मृत्यु आवश्यक

है। अपवाद केवल वे विश्वासी मसीही हैं जो मसीह के दोबारा आने पर जीवित होंगे।

आयत 23 में ज़ोर इस बात पर है कि पौलुस के लिए, "(मसीह के साथ) होना था।" उसके लिए मृत्यु इस संसार की पीड़ा और समस्याओं से छुटकारा ही नहीं था। यह उससे कहीं बढ़कर थी। मरने का अर्थ अपने अनमोल प्रभु के पास जाना है![11]

जीवन के लिए

आयत 24 में पौलुस ने जीने का एक और कारण *जीवन–दूसरों की सहायता करने के अतिरिक्त अवसर* बताया। "परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे लिए और भी लाभदायक है।" मृत्यु के बाद यीशु के साथ होना "बहुत ही अच्छा" था, परन्तु जीवित रह कर दूसरों की सहायता करना "और भी आवश्यक" था। यदि आप कागज़ के हमारे काल्पनिक टुकड़े पर "नम्बर लिख रहे" हैं तो "जीवन के लिए" के नीचे *तीन चीज़ें* आ गई हैं और मृत्यु के लिए " *केवल दो*।"

आयत 21 से 24 को दोबारा पढ़ें। मसीही व्यक्ति को ऐसे व्यवहार से कोई ठोकर नहीं लगती। क्या वह जीएगा? यह तो अच्छा है; जीने से उसे प्रभु के लिए अपने गुणों का इस्तेमाल करने के और अवसर मिलेंगे। क्या वह मरने वाला है? यह तो और भी अच्छा है। वह प्रभु के पास जा सकता है। पर यह कभी न भूलें कि ऐसा व्यवहार यीशु के साथ सही सम्बन्ध होने पर आधारित है। मुख्य बात पौलुस के साथ यह कहने के योग्य होना है कि "जीवित रहना" मेरे लिए मसीह है।

पौलुस का निर्णय (1:25, 26)

25 और 26 आयतों में पिछली अनिश्चितता से एकदम बदलाव है: "और इसलिए कि मुझे इस का भरोसा है सो मैं जानता हूं कि मैं जीवित रहूंगा, वरन तुम सब के साथ रहूंगा जिस से तुम विश्वास में दृढ़ होते जाओ और उस में आनन्दित रहो और जो घमण्ड तुम मेरे विषय में करते हो,[12] वह मेरे फिर तुम्हारे पास आने से मसीह यीशु में अधिक बढ़ जाए।" कइयों ने अनुमान लगाया है कि पौलुस को वहां पर एक विशेष प्रकाशन मिला था और सम्भावना है कि जब उसने कहा कि "शरीर में रहना *तुम्हारे* कारण और भी आवश्यक है" (आयत 24), तो इससे उसके मन की बात समझ आ गई। पौलुस में ज़िम्मेदारी की एक गहरी भावना थी। वह निस्वार्थ था। वह दूसरों को "हां" कहने के लिए अपने आपको "न" कह सकता था।

पौलुस के निर्णय को पूरी तरह से समझने के लिए 25 और 26 आयतों पर एक ही बात कुछ शब्दों पर विचार करते हैं। प्रेरित ने पहले कहा था, "किसका भरोसा है।" उसे भरोसा था कि शरीर में रहना उसके पाठकों की खातिर "और आवश्यक" था।

फिर उसने कहा, "मैं जानता हूं कि मैं जीवित रहूंगा वरन तुम सब के साथ रहूंगा।" अन्य शब्दों में, "मुझे मालूम है कि मैं जीऊंगा।" "मैं जानता हूं" वाक्यांश हो सकता है कि उतना पक्का न हो जितना पहले लगता है। संदर्भ से संकेत मिलता है कि पौलुस के मन में शंकाएं थीं कि उसकी पेशी के बाद क्या होने वाला है। तौभी मज़बूती के साथ उसे यही लगता था कि वह छूट जाएगा और फिलिप्पियों से दोबारा मिल सकेगा। फिलोमोन के नाम अपने पत्र में जो लगभग उसी समय लिखा गया, पौलुन ने कहा कि उसे उम्मीद थी कि वह फिलेमोन से जल्द

भेंट करेगा (फिलेमोन 22)।

''जीवित रहूंगा वरन तुम सब के साथ रहूंगा'' शब्दों का खेल है।''जीवित'' और ''रहूंगा'' का अनुवाद एक ही मूल शब्द से किया गया है।''जीवित'' का अनुवाद *meno* से हुआ है जबकि ''रहूंगा'' का अनुवाद पूर्वसर्ग ''के साथ'' के अर्थ वाले पूर्वसर्ग *para* के साथ *meno* से मिलाने वाले मिश्रित शब्द से किया गया है। पौलुस ने कहा, ''मैं जीवित रहूंगा, पर केवल यही नहीं; मैं तुम्हारे साथ रहूंगा। मैं तुम्हारे साथ होऊंगा।''

यह फिलिप्पियों के ''विश्वास में दृढ़ होने और आनन्दित होने'' में योगदान होना था। ''विश्वास'' का अर्थ यीशु में विश्वास पर केन्द्रित शिक्षा यानी नये नियम में प्रगट किया गया पूरा मसीही प्रबन्ध है। पौलुस फिलिप्पियों के विश्वास को ''दृढ़'' होते देखना चाहता था ताकि वे विश्वास में ''आनन्द'' कर सकें। विश्वास में आनन्दित होने के लिए विश्वास में दृढ़ होना आवश्यक है।

फिलिप्पियों के लिए इसका अन्तिम परिणाम यह होना था कि उनके पास पौलुस के दोबारा ''आने'' से ''मसीह यीशु में'' उनका ''घमण्ड'' बढ़ जाना था।

> ... उसके ''आने'' (*parousia*) का विशेष अर्थ होना था। यह शब्द मूलतया किसी विजयी या राजा के नगर में औपचारिक प्रवेश के लिए इस्तेमाल होता था। यदि पौलुस आता तो इसमें विजय की भावना होनी थी, परन्तु यदि न आता तो हार भी नहीं थी। यही शब्द मसीह के आगमन के लिए अर्धतकनीकी शब्द है (तुलना 1 थिस्सलुनीकियों 2:19; 3:13; 4:15; 5:23)।[13]

25 और 26 आयतों से हम कई सबक ले सकते हैं। उनमें से एक यह है कि हमारे निर्णय केवल उसी पर आधारित नहीं होने चाहिए जो हमारे लिए अच्छा है बल्कि इस पर भी आधारित होने चाहिए, जो दूसरों के लिए अच्छा है। सामान्य रूप में लिए जाने वाले निर्णय ऐसे ही होते हैं, मृत्यु के निकट आने पर भी। आज संसार के कई भागों में ''सुख मृत्यु,'' या ''सरल और पीड़ा रहित मृत्यु'' की बहुत बातें होती हैं।''सुख मृत्यु'' यूनानी शब्द का हिन्दी रूप है जो ''मृत्यु'' (*thanatos*) के लिए शब्द के साथ ''अच्छा'' या ''भला'' (*eu*) के अर्थ वाले प्रत्यय को मिलाता है। क्रिया रूप का अर्थ ''अच्छे से मरना'' है; यह एक मिथ्या है जैसा कि आम तौर पर इस शब्द का इस्तेमाल होता है।''अच्छी मृत्यु'' केवल ''प्रभु में मृत्यु'' है। मसीही व्यक्ति के लिए आत्महत्या कोई विकल्प नहीं है। ऐसे अभक्तिपूर्ण कार्यों के लिए यदि सभी नहीं तो अधिकतर तर्क पूरी तरह से स्वार्थ से भरे हैं। मसीही व्यक्ति अपनी मृत्यु का समय अपने परमेश्वर के हाथों में देता है। वह आत्महत्या के द्वारा कथित ''आसान रास्ता'' नहीं चुनता, इससे उसे सहायता मिले या न। मसीही व्यक्ति तो मरते हुए भी ऐसी बात कहने का अवसर ढूंढ़ सकता है जिससे दूसरे को सहायता मिले। कुछ भी न हो तो मर रहा मसीही प्रभु में हिम्मत के साथ मरने का ढंग बताकर नमूना दे सकता है।

पौलुस का अनुमान (1:27-30)

आयत 27 में पौलुस दार्शनिक से व्यावहारिक बात पर आता है। अगले पाठ में 27 से 30

आयतों पर विस्तार से बात की जाएगी। मैं बिना यह ध्यान दिलाए समाप्त नहीं करना चाहता था कि पौलुस के लिए थियोलॉजी केवल थ्यौरी नहीं थी। इसमें सदा व्यावहारिक और व्यक्तिगत प्रासंगिकता थी। इस मामले में प्रेरित अपने पाठकों को बताना चाहता था कि जो कुछ उसने लिखा है उसे समझने से उनके जीवनों में प्रभाव पड़ेगा।

पहले तो यह *विश्वासी* को मसीही जीवन जीने के लिए प्रेरणा होनी चाहिए: ''केवल इतना करो कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूं, चाहे न भी आऊं, तुम्हारे विषय में यह सुनूं, कि तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिए परिश्रम करते रहते हो'' (आयत 27)। उसने इसका संकेत उनके पास दोबारा जाने की इच्छा जताकर दिया (आयत 26)। वास्तव में अब उसने कहा कि ''ऐसा हो या न पर मैं जानना चाहता हूं कि तुम्हारे जीवन सुसमाचार से मेल खाते हैं।''

दूसरा, इनसे *साहसी* मसीही जीवन जीने की प्रेरणा मिलनी चाहिए:

> और किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते? यह उन के लिए विनाश का स्पष्ट चिह्न है, परन्तु तुम्हारे लिए उद्धार का, और यह परमेश्वर की ओर से है। क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ, कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिए दुख भी उठाओ। और तुम्हें वैसा ही परिश्रम करना है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है और अब भी सुनते हो, कि मैं वैसा ही करता हूं (आयतें 28-30)

उनमें ''वही झगड़ा'' (सताव) का था। जो पौलुस का था, सो उन्हें उसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए: ''हम जीवित रहें या मर जाएं, परमेश्वर को महिमा देने के लिए जो भी किया जा सके करेंगे!'' पौलुस घबराता नहीं था, जिस कारण उनके लिए भी डरने का कोई कारण नहीं था।

सारांश

''हों, या न हों?'' जीवन या मृत्यु? हो सकता है आप हेमलेट वाला सवाल न पूछें और हो सकता है कि आप पौलुस की तरह विकल्पों पर विचार न करें। साफ़ कहूं तो हम में से अधिकतर लोगों को मृत्यु की बात सोचना अच्छा नहीं लगता। वास्तव में कई तो इस विषय से बचने के लिए बहुत दूर निकल जाते हैं।

> विलियम रेंडोल्फ़ हियर्स्ट ने कहा था, ''मेरे सामने 'मृत्यु' शब्द का कभी नाम भी न लेना मैं इसे सुनना नहीं चाहता।'' ऑस्कर लिवेंट ने भी यही विनती की। एक प्राचीन राजा को भी ऐसा ही लगा था और जब उसका रथ कब्रिस्तान के पास से जाता तो वह पर्दे कर देता था ताकि उसे मनुष्य की नश्वरता के खामोश गवाहों को देखना न पड़े।[14]

तौभी मृत्यु एक वास्तविकता है। ''मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है'' (इब्रानियों 9:27)। सवाल यह नहीं है कि हम मरेंगे या नहीं, बल्कि यह है कि हम मरने को *तैयार* होंगे या नहीं। यदि आपको इस पाठ की कोई और बात याद नहीं है तो इसे ज़रूर याद रखें कि कोई मरने के लिए तब तक तैयार नहीं होता जब तक वह जीने को तैयार न हो। मरने को तैयार होने का अर्थ यह है कि आपको ईमानदारी से कहने के योग्य होना आवश्यक है,

“मेरे लिए जीवित रहना, *मसीह* है।” आपके लिए मसीह का क्या अर्थ है? क्या आपने अपना जीवन उसे दे दिया है? यदि नहीं तो उस समर्पण को करने में एक और दिन न जाने दें!

टिप्पणियां

[1]विलियम शेक्सपियर (1564–1616), एक अंग्रेज़ कवि और नाटककार, जिसने पश्चिमी सभ्यता के इतिहास में साहित्य का सबसे प्रभावशाली भाग लिखा। उसका नाटक *द ट्रेजिकल हिस्टरी ऑफ़ हेमलेट प्रिंस ऑफ़ डेनमार्क* लगभग 1600 में लिखा गया था। हेमलेट का स्वगत-संभाषण एक्ट 3, सीन 1 में मिलता है। “स्वगत संभाषण” एक साहित्यिक माध्यम है जिसके द्वारा पात्र अपने आप से बातें करके स्रोताओं पर अपने विचार प्रकट करता है। [2]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द फिलिपियंस, कोलोशियंस एंड थेस्लोनियंस,* संशो. संस्क., दि डेयली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 27. [3]पेट एड्विन हैरेल, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द फिलिपियंस,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, संपा. एवरेट फर्ग्यूसन, [ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969], 73. [4]हेमलेट “हारने की स्थिति” में था जबकि पौलुस “जीतने की स्थिति” में था। [5]पौलुस की बातें चाहे दूसरों के साथ थी पर कइयों ने इस पद्य को हेमलेट के स्वगत संभाषण से मिलाया है। कॉफ़मैन ने जीवन और मृत्यु पर प्रेरित की इस चर्चा को “पौलुस का महान स्वगत संभाषण” कहा है (जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमैंट्री ऑन गलेशियंस इफिशियंस, फिलिपियंस कोलोशियंस* [ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाऊस, 1977], 270)। [6]जहां में रहता हूं वहां हम कह सकते हैं कि उसने हर शीर्षक के नीचे “pros” कह सकते हैं। हम “pro” और “con” अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल करते हैं। फिर “pro” “के लिए” का लातीनी शब्द है जबकि “con” “विरुद्ध” का लातीनी शब्द। [7]एवन मेलोन, *प्रैस टू द प्राइज* (नैशविल्ले: टवंटियथ सेंचुरी क्रिश्यिचन, 1991), 39. [8]इस संदर्भ में “शरीर” (*sarki*) का अर्थ पौलुस के अन्य लेखों की तरह अपनी निर्बलता में मानवीय स्वभाव नहीं होता है (तुलना 1 कुरिन्थियों 1:29; गलातियों 2:16; रोमियों 7:25; 8:4–9), बल्कि यह “देह” (आयत 20) के समानांतर है (हैरेल, 72–73)। [9]*दि अनेलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, लिमिटेड, 1971), 80. [10]इस शब्द का इस्तेमाल किसी कठिन समस्या को सुलझाने जैसे अन्य ढंगों में भी किया जाता था। इस पद्य में जानकारी बार्कले, 28 से ली गई; मेलोन, 41; और वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 70.

[11]“कूच करके मसीह के साथ रहना” वाक्यांश का इस्तेमाल करते हुए पौलुस यह नहीं कह रहा था कि मृतकों की कोई बीच की स्थिति में था जिसकी बात मसीह ने लूका 16 में बताई थी। यीशु अधोलोक के क्षेत्र में शासन करता है (प्रकाशितवाक्य 1:18)। यीशु में मर जाने का अर्थ *पूरी* रीति से “यीशु के साथ” होना है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:10)। परन्तु द्वितीय आगमन और न्याय के दिन के बाद जब धर्मी लोग स्वर्ग में जाएंगे तब हम *पूरी* रीति से “यीशु के साथ” होंगे (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 4:17)। [12]“जो घमण्ड तुम मेरे विषय में करते हो” वाक्यांश का अक्षरश: अर्थ होगा “ताकि मेरे तुम्हारे पास दोबारा होने से मेरे द्वारा यीशु मसीह में तुम्हारा घमण्ड बढ़ सके।” यह पद्य यह स्पष्ट नहीं करता कि फिलिप्पियों के घमण्ड का कारण कौन था। “मसीह यीशु में” और “मुझ में” मिलते-जुलते विरोध से साथ-साथ चलते हैं। “मसीह यीशु में” के साथ ही “तुम्हारा घमण्ड” आता है इस कारण मेरी प्राथमिकता उनके घमण्ड का कारण मसीह ही होगी। यदि ऐसा है तो पौलुस उम्मीद कर रहा था कि उसके वापस आने पर प्रभु में उनका घमण्ड बढ़ जाएगा। CJB में “तो मेरे फिर से तुम्हारे पास होने से, तुम्हें मसीहा [यीशु] पर घमण्ड करने का और भी बड़ा कारण मिलेगा।” [13]हैरेल, 77. [14]यह पद्य 1984 के लगभग “ट्रुथ इन लव” (फोर्ट वर्थ, टैक्सस) नामक टीवी कार्यक्रम पर एवन मिलोन द्वारा दिए “सर्वे ऑफ़ द बुक ऑफ़ फिलिपियंस” पर लैक्चर से लिया गया था। हर्स्ट (1853–1951) पब्लिशिंग के कारोबार में अमेरिकी करोड़पति और लेवेंट (1906–1972) एक कम्पोज़र और पियानोवादक था।